कर्णावती दर्पण

प्रवेशांक

वर्ष 2005-2006

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II

नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009

20-12-2005 को 'स्टाफ कैंटीन' का उद्घाटन करते हुए श्री देवेन्द्र दत्त, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क, अहमदाबाद, गुजरात क्षेत्र, उनके पीछे (बाएं) श्रीमती जगजीत पवाडिया, आयुक्त के. उ.शु. अहमदाबाद-I, श्री बी.एस. वासुदेव, आयुक्त के.उ.शु. अहमदाबाद -III, श्री दीपककुमार, आयुक्त (अपील) अहमदाबाद और श्री एम.आर.आर. रेड्डी, संयुक्त आयुक्त (का. व स.) के.उ.शु. अहमदाबाद-II

प्रवेशांक "कर्णावती दर्पण" वर्ष 2005-2006

विभागीय दर्पण संरक्षक

श्री सुभाष चंद माथुर
मुख्य आयुक्त
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क : अहमदाबाद क्षेत्र

प्रधान सम्पादक

श्री बी.आर.त्रिपाठी
आयुक्त
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क : अहमदाबाद-II

परामर्शदाता

श्री संजय राठी - श्री एम.आर.आर. रेड्डी
संयुक्त आयुक्त

सम्पादक

श्री प्रताप डी. डावरा
सहायक निदेशक, (राजभाषा), के.उ.शु., अहमदाबाद-I

सम्पर्क सूत्र

श्री रमेश जे. परमार
अवर श्रेणी लिपिक, प्रशा.अनु.(मु.)

प्रकाशक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अमहदाबाद-II
''सीमा शुल्क सदन'' नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009

मुख पृष्ठ

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क भवन, अमहदाबाद-II

रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल
का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
01	संदेश	श्री सुभाषचंद माथुर	3
02	प्रधान सम्पादक की कलम से	श्री बी.आर.त्रिपाठी	4
03	संदेश	श्री संजय राठी	5
04	संदेश	श्री एम.आर.आर. रेड्डी	6
05	संदेश	श्री प्रभातकुमार	7
06	सम्पादकीय	श्री प्रताप डी. डावरा	8
07	सरस्वती वंदना	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	9
08	किलकारी	सुश्री कविता भट्नागर	10
09	कैलाश मानसरोवर यात्रा नेपाल मार्ग से	श्री कमलदोसी	11
10	कहानी अधीक्षक 642 की	श्री के. ग. दरजी	15
11	आज की नारी कैसे करती है सफल जीवन की तैयारी ?	श्रीमती मंजू सी. मेहता	16
12	वरदान	श्री अबरार सैय्यद	18
13	छोटी सी बात	श्री प्रदीप कुमार शर्मा	19
14	नया नया एवं ज्ञान	सुश्री रंजना जयेन्द्रभाई गोकली	21
15	इसे मत पढ़िये यह बकवास है। एवं आँखे	श्री अबरार सैय्यद / श्री अनिल शर्मा	22/23
16	तुम्हें भूल पाता मैं कैसे ?	श्री अजीत आर. सिंह	24
17	हिन्दी सप्ताह का आयोजन एक रपट	संकलन	25
18	अधरों पर गीत	श्री अजीत आर. सिंह	28
19	स्थापना (रेज़िंग) दिवस का आयोजन एक रपट	संकलन	29
20	औरत	सुश्री कविता भट्नागर	33
21	वेशभूषा	श्री रमेश आत्मारामाणी	34
22	पैसा ही पैसा	वाय.बी. त्रिवेदी	35
23	आइए हिन्दी में काम करें।	संकलन	36
24	कौन अमीर ? कौन गरीब ?	संकलनकर्ता - श्री एस.एम.दास	41
25	आयुक्तालय द्वारा पुरस्कृत रचनाएं		
	(क) हिन्दी का भविष्य सुनहरा है।	श्रीमती संगीता अधिकारी	42
	(ख) भारतीय खेल जगत में उभरता सितारा - सानिया मिर्जा	श्री वी.बी. माथुर	44
26	कतरनें क्या बोलती हैं ?	संकलन	45
	क - आपका मन		
	ख - हिन्दी किताब का संकट		
	ग - यह नया अंग्रेजी पत्र		
	घ - सोफ्टवेयर देशी भाषाओं में तैयार हों सोनिया		

सुभाष चंद माथुर

संदेश

मैं, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II द्वारा विभागीय पत्रिका *"कर्णावती दर्पण"* का प्रवेशांक प्रकाशित करने के लिए सम्पादक मण्डल को बधाई देता हूँ।

इससे न केवल आयुक्तालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा उजागर होगी, बल्कि सरकारी कामकाज में हिन्दी में काम करने की गति भी बढ़ेगी। इससे राजभाषा हिन्दी का विकास एवं प्रचार-प्रसार भी होगा।

मैं, सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक सरकारी काम हिन्दी में करके अपनी नैतिकता एवं संवैधानिकता का दायित्व निभाएं।

मैं, "कर्णावती दर्पण" के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका प्रेरणास्पद एवं उपयोगी सिद्ध होगी। आगे, इसके प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से जुड़े अधिकारियों / कर्मचारियों को उनके परिश्रम के लिए बधाई देता हूँ।

सुभाष चंद माथुर

मुख्य आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क : अहमदाबाद क्षेत्र

बी. आर. त्रिपाठी

प्रधान सम्पादक की कलम से :

इस आयुक्तालय का कार्यभार संभालते ही मैंने महसूस किया कि यहाँ के अधिकारी एवं कर्मचारी-गण हिन्दी का अच्छा ज्ञान रखते हैं वे हिन्दी में सरकारी काम करने की समुचित क्षमता भी रखते हैं। इस प्रदेश में जनता के साथ आदरपूर्ण सम्पूर्ण बातचीत हिन्दी में की जाती है। केवल पत्रिका प्रकाशन की कमी खटक रही थी। इसलिए अधिकारियों / कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाने के लिए यह आवश्यक हो गया कि आयुक्तालय की विभागीय पत्रिका का प्रकाशन शीघ्र किया जाए। इस संबंध में प्राप्त सुझावों के आधार पर पत्रिका का नाम "कर्णावती दर्पण" रखा गया है। परिणाम स्वरुप इसका प्रवेशांक आज आपके हाथों में है।

मेरे विचार में इस अंक के माध्यम से सरकारी कामकाज के अलावा/इतर अधिकारियों एवं कर्मचारियों का साहित्यिक पक्ष तो उजागर होगा ही बल्कि उनके बीच आत्मीयता एवं प्रेमभाव भी बढ़ेगा।

प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि विभागीय पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं सार्थक बनाने के लिए अपनी सम्मति तथा रचनात्मक सुझाव भेजकर हमारा मार्गदर्शन करें।

बी. आर. त्रिपाठी

आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - II

संजय राठी

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवम् उल्लास का विषय है कि आयुक्तालय अपनी विभागीय पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है । इससे हिन्दी भाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धिता परिलक्षित होती है ।

राजभाषा के प्रचार और प्रसार में इस पत्रिका का उल्लेखनीय योगदान रहेगा, ऐसी मैं उम्मीद रखता हूँ । हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग हमारी सरकारी जिम्मेदारी ही नहीं वरन् नैतिक कर्तव्य भी है ।

मैं पत्रिका के संकलन एवम् संपादन से जुडे सभी अधिकारियों एवम् कर्मचारियों को बधाई देता हूँ । लेखकों को भी मेरी बधाई । मैं यह भी उम्मीद रखूँगा की इस पत्रिका का अगला अंक समय से प्रकाशित हो जाए ।

(संजय राठी)
संयुक्त आयुक्त
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II

एम. आर. आर. रेड्डी

संदेश

अपना कार्यभार संभालते ही यह जानकर अत्यन्त आनन्द हुआ कि आयुक्तालय की विभागीय पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित हो रहा है। इससे सरकारी कामकाज से संबद्ध कर्मचारियों की प्रतिभा उजागर होती है। यह भारत की एकता को जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इससे विभागीय कार्य कलापों का पता लगता है। इससे एक दूसरे के विचारों का आदान प्रदान होता है।

मैं, पत्रिका के सम्पादक मण्डल एवं लेखकों को धन्यवाद देता हूँ और इसके निरन्तर प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

(एम. आर. आर. रेड्डी)
संयुक्त आयुक्त (का.व स.)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II

प्रभात कुमार

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि केंद्रीय उत्पादन शुल्क, अहमदाबाद-II विभागीय हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन में पदार्पण कर रहा है। मुझे आशा है कि इस प्रयास से आयुक्तालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा उजागर होगी और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सहयोग भी प्राप्त होगा। परिणामस्वरुप, सरकारी काम अधिक से अधिक कुशलतापूर्वक किया जा सकेगा। हम हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना कर्तव्य भी निभा सकेंगे तथा हिन्दी के प्रति रुचि भी बढ़ा सकेंगे।

मैं, पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

(प्रभात कुमार)

संयुक्त आयुक्त

प्रताप डी. डावरा

सम्पादकीय

विभागीय पत्रिका "कर्णावती दर्पण" का प्रवेशांक प्रस्तुत करते हुए हर्ष हो रहा है। हमें अपना सरकारी काम अधिक से अधिक राजभाषा हिन्दी में करना है, इसके रास्ते में कई बाधाएं आएंगी, उनका सामना करते हुए हिन्दी की विकास यात्रा को आगे बढ़ाना है। कठिनाईयों से मार्ग ढूँढकर हिन्दी को सरल, सहज एवं निर्मल बनाना है।

पत्रिका में रचनाएं आदि देने के लिए सभी लेखक धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि आगामी अंक के शीघ्र प्रकाशन के लिए अपने रचनात्मक सुझाव एवं अपनी अमूल्य रचनाएं भेजकर योगदान प्रदान करें।

पत्रिका को और सुन्दर, उपयोगी एवं सार्थक बनाने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रताप डी. डावरा
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - I

सरस्वती वंदना

वर दे, वीणा वादिनी वर दे

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव

भारत में भर दे ।

वर दे.....२.

काट अन्ध उर के बन्धन-स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,

कलुष-भेद तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे ।

वर दे.....२.

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव

नवल कण्ठ, नव जलद - मन्दरव

नव नभ के नव विहग वृन्द को

नव पर, नव स्वर दे ।

वर दे.....२.

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

माँ भारती के अमर पुत्र

किलकारी

इन नन्हें-नन्हें हाथों में
दुनिया मेरी समायी है,
इन भोली-भोली आंखों में
खुशियां मेरी सिमट आयी हैं ।
ये हसें, तो हंस दूं मैं,
इनके लिए
क्या कुछ नहीं सह लूं मैं ।
इनके साथ
दुनिया नयी सजायी है ।
अनमोल इनका जीवन है
अनमोल इनका संग,
इन्हें संवारने में
खुशियां अनगिनत पायी हैं ।
नादान है ये, पर नासमझ नहीं,
इनकी समझ ने
सुलझायी मेरी कठिनाई है ।
मान है ये मेरे
और मेरा अभिमान भी
इनके सपनों में
नयी किरणें पायी हैं ।
हर मां के लिए
बच्चे उसके सुखदायी हैं
पर मेरे जीवन की
इन्होंने पहचान बनाई है ।

सुश्री कविता भट्नागर
उपायुक्त

कैलाश मानसरोवर यात्रा नेपाल मार्ग से

।। ओम नमः शिवायः ।।

अन्तर्मन को आल्हादित करनेवाली यात्रा के संबंध में उल्लिखित करना प्रासंगिक होगा कि कैलाश तथा मानसरोवर दो पृथक - पृथक स्थल हैं ।

कैलाश - मानसरोवर - शिव की अनुभूति , जहाँ प्रकृति अपने मूल स्वरुप में विद्यमान है, जिसकी प्राकृतिक सौन्दर्यता का वर्णन ऋषि मुनियों एवं कवियों की बोद्धिकता से परे है, जिसके दर्शन की बारम्बार तृष्णा होती है इसी अनुपम अविर्णीय छटा एवं पवित्रता के दर्शन-स्नान - ध्यान जीवन के अमूल्य क्षण हैं तथा ईश्वरीय अनुकम्पा, माता - पिता, एवं पितृ देवताओं के आशीर्वाद से ही फलीभूत होती है । इस पवित्र पावन धाम के दर्शन - स्नान - ध्यान से जीवन कृतार्थ हो जाता है।

कैलाश - मानसरोवर पर कोई मन्दिर, पुजारी, संत, गद्दी आदि नहीं है, जैसा कि सामान्यतः अन्य तीर्थो पर होता है । यहाँ तो मात्र प्रकृति,मानव एवं भगवान भोलेनाथ की अनुभूति ही होती है ।

कैलाश - प्राचीन आख्यानों के अनुसार, अखिलेश्वर देवाधिदेव भगवान शंकर एवं आदिशक्ति माता पार्वती कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं।

कैलाश, काठमाँडू से लगभग 1200 कि.मी. (100 कि.मी. नेपाल में तथा 1100 की.मी. चीन में) दूर

चीन देश के पश्चिमी तिब्बत प्रांत में. पर्वतेश्वर हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत श्रृंख्लाओं के मध्य मूर्त रुपमें अवस्थित है। कैलाश पर्वत की आकृति विशिष्ट प्रकार की है जो सहज ही मानव मन को आकृष्ट एवं उद्वेलित करती है ।

कैलाश पर्वत शिखर की समुद्र तल से ऊँचाई 6714 (22028 फीट) है तथा उसकी परिक्रमा लगभग 56 कि.मी. है।

विश्व में कैलाश ही एक मात्र स्थान है जहां विश्व समुदाय के चार धर्मों के अनुयायियों द्वारा यात्रा की जाती है ।

(1) हिन्दू (2) जैन (3) बौद्ध (4) तिब्बतीबोनपा ।

ऐसी मान्यता है कि कैलाश में भगवान शिव के पांच स्वरुपों में दर्शन होते हैं ।

पूर्व में तत्पुरुष, पश्चिम में - सद्योजत, उत्तर में - वामदेव, दक्षिण में अघोर तथा ईशान पर्वत के ऊपरी भाग में । वैसे इस पवित्र स्थल में मानव जैसी ईच्छा एवं कामना करता है वैसे ही स्वरुप में देवाधिदेव महादेव कैलाश में दर्शन देते हैं ।

मानसरोवर : हिमालय की गोद में हिमाच्छादित पर्वत श्रृंख्लाओ के मध्य अवस्थित नीले रंग की विशाल, शांत एवं सुरम्य झील है।

ऐसी मान्यता है कि ब्रह्माजी के मानस से विशालकाय झील की रचना हुई थी । समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 15000 फीट है। मानसरोवर की झील में मोती की संज्ञा प्रदान की गई है ।

मानसरोवर में पितृ तर्पण का बहुत महत्व है। झील का जल स्वच्छ, निर्मल एवं नीला है । ऐसी मान्यता है कि आज भी देवतागण एवं सप्तऋषि मानसरोवर में स्नान कर कैलाश की आराधना करते हैं । सरोवर की परिक्रमा लगभग 100 कि.मी.4है ।

अन्य स्थान - गौरी कुंड - दर्शन कैलाश परिक्रमा के दौरान होते हैं।

राक्षस ताल - मानसरोवर के समीप अवस्थित छोटा सरोवर है। ऐसी मन्यता है कि यहां राक्षसराज लंकापति रावण ने भगवान शिव की आराधना की थी।

यात्रा मार्ग - नेपाल मार्ग से यह यात्रा 18 दिन में संपूर्ण होती है इसके लिए हमें पासपोर्ट आवश्यक है, इसके अतिरिक्त सभी सुविधाएँ जैसे :- वीज़ा, गाड़ी, खाने, ठहरने, पोर्टर, गाइड, टेन्ट इत्यादि अहमदाबाद /नेपाल स्थित एजेन्टों द्वारा कर दी जाती है।

इससे हमें बहुत ही सुविधा होती है इस मार्ग से यात्रा में हमें केवल कैलाश परिक्रमा के दौरान तीन दिन ही पैदल चलना होता है।

पहला दिन - दिल्ली से काठमांडू वायुयान द्वारा इन्दिरागांधी ईन्टरनेशनल एअर पोर्ट से प्रस्थान। और काठमांडू पहुंचकर शाम को भगवान शिव के प्रसिद्ध मन्दिर पशुपतिनाथ के दर्शन।

दूसरा दिन - कांठमांडू से 35 कि.मी. दूर समुद्र से 6000 फीट की ऊँचाई पर स्थित धूलीखेल नामक स्थान पर रात्रि विश्राम, यह छोटा सा कस्बा है जो पहाड़ी क्षेत्र में बसा एक छोटा सा बहुत ही रमणीय पर्वत स्थल है।

तीसरा दिन - धूलीखेल से 65 कि.मी. दूरी पर स्थित कोदारी नामक गाँव जो कि समुद्र तट से 8000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह नेपाल की सीमा पर अंतिम गाँव है। और यहीं सें हमे 60 मीटर लम्बाई वाला पुल पैदल चलकर तिब्बल (चाइना) की सीमा में प्रवेश करना होता है। और इस पुल को ''फ्रेन्डशिप ब्रिज़'' कहते हैं।

इसी स्थान पर कस्टम और आप्रवास सम्बन्धी कार्यवाही भी पूरी करनी होती है। यहाँ से हमें छोटी गाड़ियो में बैठकर आगे की यात्रा करनी होती है।

इस यात्रा में पहला पड़ांव न्यायालम नामक गाँव आता है, जो समुद्र तल से 12000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है, और यहीं से हमारी सही माईने में कैलाश-मानसरोवर की यात्रा प्रारंभ होती है।

इसके बाद के दिनों में अधिकतम रात्रि विश्राम टेन्ट में करना होता है।

चौथा दिन - न्यायालम से सागा की दूरी को तय करना होता है जो कि 230 कि.मी. की है, रास्ता बहुत ही दुर्गम और खराब है और यहाँ पर ऊँचाई लगभग 15500 फीट हो जाती है, इस दौरान हमें ''पीगूट-शू झील'' के दर्शन होते हैं, जो यह एक विशाल सरोवर जैसी है।

पांचवां दिन - सागा से प्रयांग के लिए प्रस्थान करना होता है जो कि. 240 कि.मी. है इस दौरान हमें ब्रह्मपुत्र नदी को पार करमा होता है।

छठादिन - प्रयांग से चोगंपा जो कि 380 कि.मी. है यह स्थान मानसरोवर के किनारे स्थित है और यहां पर बौद्धधर्म की पुरानी मोनिस्ट्री है, यहां से प्रथम बार कैलाश पर्वत के दर्शन होते हैं।

सातवां दिन - पवित्र मानसरोवर की परिक्रमा गाड़ी में करते हैं, जिसमें 3-4 घंटे लगते हैं। बाद में पूजा - अर्चना करते हैं।

आठवां दिन - मानसरोवर से दारचेन प्रस्थान करते हैं जो लगभग 50 कि.मी. स्थित छोटा सा गांव है यहां पर खच्चर और याँक कैलाश परिक्रमा के लिए उपलब्ध होते हैं।

नौवां दिन - यहां से 12 कि.मी. दूर स्थित यम द्वार नामक स्थान है यहाँ हम गाड़ी से पहुंचते हैं, और यहीं से कैलाश की परिक्रमा प्रारंभ होती है पहले दिन की परिक्रमा में 18 कि.मी. की दूरी तय करके हम देरापूक नामक स्थान पहुंचते हैं।

देरापूक ही ऐसा स्थान है जहां से कैलाश पर्वत के सम्पूर्ण एवं भव्य और सबसे अधिक पास के दर्शन होते हैं, विशेषकर सूर्योदय के समय का दृश्य अस्मरणीय एवं अद्‌भुत है।

दसवां दिन - दूसरे दिन 22 कि.मी. की दूरी तय करनी होती है जो बहुत कठिन और दुर्गम है इस दौरान हमें 'डोल्मापास' को पार करना होता है जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 19500 फीट है, इसी दौरान हमें गौरी कुन्ड के दर्शन होते है।

तीसरा दिन यह परिक्रमा का अंतिम दिन होता है इस दिन मात्र हमें 8 कि.मी. पैदल चलना होता हैं और यहां से हम जैन तीर्थ "अष्टपाद" के दर्शन के लिए भी जा सकते हैं।

इसके बाद हम गाड़ी से होरचा नामक स्थान जो कि मानसरोवर के किनारे स्थित है वहां पहुँचते हैं। रात्रि विराम।

अगले दिन से हमारी वापसी की यात्रा प्रारंभ होती हैं, जो प्रयांग, सागा, न्यायाल, धूलीखेल होते हुए कांठमांडू पहुंचती है। और काठमांडू से अगले दिन वायुयान से दिल्ली पहुंचते हैं। इस प्रकार 18 दिन में यह यात्रा संपूर्ण होती हैं।

कमलदोसी

अधीक्षक

कहानी अधीक्षक 642 की.....

याद है वो दिन मुझे, अब कहा तुम हो अधीक्षक,

पता नही था किसीको, कि अधि की होगी यही कढ़ी।

बोर्ड ने किया रि-स्ट्रक्चर केडर को हुआ बड़ा फ्रेक्चर

न कोई आरा न चारा, अधीक्षक हुआ बेचारा।

गुजरे वो जमाने जहां थी अधी की बात अधिक,

थे चार - छ लघुकर्मीभ्राता, एक ही अधी के नीचे

अब जमाने ने ली करवट

न निरीक्षक, न टी.ए., न सिपाही न फरास,

फाइल खोलो, डॉकेट करो, करो नोट व स्क्रुटिनी खुद आप,

बड़े साब के हस्ताक्षर ले के, जाओ डाकघर डिस्पेच करवाने काज।

दिये टारगेट... राजस्व एवं बकाया राशिका

कहा छूलो आकाश को, लेकिन पंख कहाँ,?

और करलो सागर को पार मगर नाव कहाँ ?

करो काम मण्डलों में, खोलके पुराने बंडलो में,

पर ! नहीं होगा स्टाफ, चूँ कि करना है तुम्हें तल का काम (Ground Work)

कहा किसीने भई, लिखो कविता इस पर,

पर रहे ध्यान, न मिलेगी कागज कलम - दवात ॥

के. ग. दरजी

अधीक्षक - 642

आजकी नारी: कैसे करती है सफल जीवन की तैयारी ?

मनु स्मृति में कहा गया है कि जिस घरमें नारी की प्रतिष्ठा होती है, उसी में देवताओं का वास होता है। तो दूसरी तरफ मध्ययुगीन सन्तों ने उसे नागिन, नर्क की खान, वासना की बेली कहकर अपमानित किया। मैथिलीशरण गुप्त जैसे आधुनिक कवियों ने "अबला जीवन" की कसज कहनी के प्रति आश्वासन पूर्ण सद्‌भाव अभिव्यक्त किया। प्रगतिशील कवियों ने युगों से मुक्ति के लिए रोती-चिल्लाती नारी की वकालत करते हुए कहा :-

मुक्त करो नारी को मानव
चिर बन्दिनी नारी को
युग - युग की बर्बर कागसे
जननी सखी प्यारी को ।
और इस बात पर जोर दिया गया कि
छोटों की माँ, बड़ों की बहू बेटी है
समवयस्कों की वह बहन,
कहां किसकी चेरी है?

लेकिन आज की नारी न अपने को चेरी मानती है न पतिको परमेश्वर मानने की परंपरागत बात का समर्थन करती है। सही बात तो यह है कि नारी का मूल्यांकन एक व्यक्ति के रुपमें होना चाहिए। आज नारी ने यह बात सिद्ध कर दी है कि नारी को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त होने चाहिए क्योंकि वह शक्ति, सामर्थ्य और ज्ञान में किसी भी तरह पुरुष से कम नहीं। भारत का इतिहास पुरुषों की वीर गाथाओं से महिमा मंडित है तो नारियों के त्याग एवं बलिदानों की कथाओं से भी जगमगा रहा है।

नारी के शोषण का प्रमुख कारण था उसकी निरक्षरता और आर्थिक परावलंबन, उसकी मूक सहिष्णुता, उस के सर पर थोपे गये, खोखले आदर्श, उस के जीवन में भावुकता का अग्र स्थान। आज की पढ़ी लिखी नारी हर क्षेत्र में दिलचस्पी ले रही है। एक ओर वह

व्यक्ति विकास एवं व्यवसायलक्षी पाठयक्रमों द्वारा रोजगार प्राप्ति के लिए सज्जता बढ़ा रही है, तो दूसरी और वह अपने दाम्पत्य जीवन को सुंदर, मधुर एवं उन्नत बनाने के लिए, जीवन साथी के चयन, मातृत्व, बच्चों की परवरिश के आधुनिक तौर - तरीके, रोगों की रोकथाम, स्वास्थय, वेशभूषा, केशभूषा, विविध व्यंजनों की जानकारी, पूरक रोजी के लिए गृहोद्योग- आदि का प्रशिक्षण भी प्राप्त-कर रही है। पारिवारक सम्बन्ध एवं उसकी समस्याओं से आज की नारी अवगत होने की कोशिश कर रही है। अंधविश्वास, दहेज एवं पुरुषप्रधान समाज के जुल्मों का वह खुल कर विरोध कर रही है ।

इसके बावजूद भी इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि ग्रामीण इलाकों में रहनेवाली नारी आज पिछड़ी हुई है। निरक्षरता के अभिशाप एवं ससुराल के त्रास से मुक्त नहीं । आज भी नारीके साथ बलात्कार होता है । उसे बेमौत मरने के लिए मजबूर किया जाता है। उसे मार डालने के षड्यंत्र होते हैं । नारी को यदि परिवारिक एवं सामाजिक जीवनमें सफल होना है तो उसे सस्ती लोकप्रियता एवं चाटुकारिता, बाह्य ठाट-बाट के प्रति अंधी दौड़ एवं बनावटी जीवन से दूर स्वाभिमान युक्त, ज्ञानगरिमा युक्त एवं जीवन विषयक उन्नत एवं ध्येयलक्षी दृष्टिकोण को अपनाना होगा अपनी उपेक्षित दलित - पीड़ित एवं परित्रस्त निरक्षर एवं अल्पशिक्षित भगिनियों के जीवन - सुधार के लिए भी संकल्प बद्ध होना पड़ेगा नारी जीवन की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है अपने सही व्यक्तित्व की पहचान । इस दिशा में आज की नारी की यात्रा शुरु हो चुकी है । साक्षरता, आर्थिक स्वावलम्बन, जीवन के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण एवं निर्भयता नारी के जीवन को उन्नत बनाने की कुंजियाँ हैं । नर एवं नारी परस्पर के पूरक हैं, कवि देवराज दिनेश ने इसीलिए कहा है :-

नारी बिन नर मौन खड़ा है, नर बिन जीवन बहुत कड़ा है
एक पंख के साथ कहो कब, विहग भला उड़ सका गगन में ।

अत : शक्ति स्वरुपा नारी को समादृत करते हुए कहें :

युग युग की प्रेरक शक्ति उठो नारी
देखो जग के आंगन में नवयुग आया ।

श्रीमती मंजू सी. मेहता,
सेवा निवृत्त, अधीक्षिका

वरदान

हमको दे-दे तू वरदान सांई
फिर लड़े ना कभी भाईभाई
एक हो के झुकें तेरे दर पे
दूर कर दे हमारी जुदाई ॥

तू जो लाया धरम वो सही है।
सबका मालिक तो एक वो ही है।
हर धरम ने जो बात बताई
भाषा प्रेम की तूने सिखाई

फिर ना जागे धरम की लड़ाई
दुश्मनी की हो जग से बिदाई

हमको दे-दे तू वरदान सांई
फिर लड़े ना कभी भाई-भाई ॥

कोई रामा कहे या खुदाया
कोई नानक कहे या मसीहा
हर बन्दे ने सर को झुकाया
तेरे चरणों पे सुख चैन पाया

एक खुदा है एक है ईश्वर
आस दाता से सबने लगाई

हमको दे-दे तू वरदान सांई
फिर लड़े ना कभी भाई-भाई
एक हो के झुके तेरे दर पे
दूर कर दे हमारी जुदाई।

अबरार सैय्यद
अधीक्षक

छोटीसी बात

जीवन चलने का नाम है। जब तक गति है तब तक प्रगति है। जीवन में स्थिरता या ठहराव थोड़े समय के लिए ही उपयुक्त है। अधिक ठ़हराव अथवा प्रगति हीनता राष्ट्र एवं व्यक्ति विशेष दोनों के लिए हानिकारक है। समय से पहले ठहरावका अर्थ है समय से पहले बुढ़ापा आना। जब तक मनुष्य में आगे बढ़ने की इच्छा होती है तभी तक उसका दिमाग निरन्तर नई - नई योजनाएं बनाता है और अपने एवं स्वजनों के लिए सुख सुविधाएं एकत्र करता रहता है। जहाँ इच्छाएं समाप्त होती हैं वहीं से विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। मनुष्य के शरीर में चुस्ती एवं स्फूर्ति भी उसके दिमाग के कार्य के अनुरुप हो जाती है। दिमाग चुस्त दुरस्त होगा तो शरीर भी स्वस्थ रहेगा, दिमाग द्वारा बनाई जाने वाली योजनाओं का क्रियावयन तो आखिर शरीर द्वारा होता है। अत: दिमाग और शरीर एक दूसरे के पूरक की तरह कार्य करते हैं। जब दिमाग में स्थिरता आती है तो शरीर में शिथिलता आने लगती है। यही शिथिलता बुढ़ापे के आने का संकेत है। अत: हर व्यक्ति को बुढ़ापा दूर रखने के लिए शरीर और दिमाग दोनों को बराबर व्यस्त रखना होगा। जो व्यक्ति ऐसा नहीं करते शीघ्र बूढ़े हो जाते हैं। अक्सर लोगों में यह भ्रम पाया जाता है कि शारीरिक परिश्रम से बुढ़ापा नहीं आता, आम तौर पर पाया गया है कि श्रमजीवी वर्ग अर्थात् मजदूर, किसान, बोझा उठाने वाले लोग समय से पहले बूढ़े हो जाते हैं। इसके विपरीत बुद्धिजीवी वर्ग के लोग अधिक समय तक जवान एवं तंदुरस्त रहते हैं और उन्हें बुढ़ापा देर से आता है। मजदूर वर्ग श्रम तो अधिक करता है परन्तु उसके अनुपात में दिमागी कार्य नहीं के लगभग ही करता है जिससे उनका दिमाग शिथिल पड़ जाता है और उनमें जीवन के प्रति उदासीनता पैदा हो जाती है। ऐसे में उनका किसी काम में मन नहीं लगता और काम को मजबूरी समझकर करते हैं। बुढ़ापा शरीर से अधिक दिमाग की बीमारी है। अगर दिमाग ने मान लिया कि आप बूढ़े हो गये हैं और कोई विशेष कार्य नहीं कर सकते तो आपके शरीर में वो कार्य करने की क्षमता ही नहीं रहेगी। उन्नत देशो में लोगों में जीने का उत्साह अधिक पाया जाता है अत: वे लोग अधिक उम्र तक जवान बने रहते हैं।

जो लोग जीवन में एक रुपता ले आते हैं उनकी जीवन शैली में कोई बदलाव नहीं होता, अत: उनमें नीरसता छा जाती है। इसी नीरसता के कारण जीवन में उदासीनता आती है जो बुढ़ापे को जल्दी बुलाने के संकेत हैं। शारीरिक श्रम करने वाले लोगों की जिन्दगी में एक विकट एकरुपता पैदा हो जाती है जैसे प्रात: उठकर नित्यकर्म से छुटकारा पाकर तुरन्त भोजन करना फिर मजदूरी (कार्य) के लिए जाना शाम तक कार्य करने के बाद (थक कर आना) और शाम का भोजन करके सो जाना। इसी एकरुपता से जीवन में एक ठहराव आ जाता है जो उनकी प्रगति में बाधक होता है। इसी जीवन क्रम में उन्हें कब बुढ़ापा आ जाता है इसका पता उन्हें स्वयं भी नहीं चलता। शारीरीक क्षमता कम होती जाती है, अधिक मेहनत वाला कार्य करते ही थकावट लगती है, और काम से मन ऊबने लगता है। यही सब बुढ़ापे के लक्षण हैं।

इसके विपरीत बुद्धिजीवी वर्ग में शारीरिक श्रम से अधिक महत्त्व मानसिक कार्य को दिया जाता है जिससे उनका दिमाग जागरुक रहता है और नित्य नई योजनाओं का गढ़न करता हैं इन योजनाओं को अमली जामा पहनाने के लिए शरीर कोभी कार्यशील करना पड़ता है जिससे शारीरीक एंव मानसिक कार्यों में समन्वय बन जाता है। मनमें उत्साह होने के कारण बुढ़ापा आने से डरता है ऐसे लोग स्वस्थ तंदुरस्त एवं दीर्घायु होते हैं।

विद्यार्थी को अगर अपने भविष्य की रचना करनी है तो उसे छोटी उम्र से ही मानसिक एवं शारीरिक श्रम में संतुलन बनाना होगा। ज्यादा पढ़ने से दिमाग थक जाने पर शारीरिक श्रम जैसे व्यायाम अथवा खेलकूद में लग जाना चाहिए, उससे मन को पुर्न शक्ति प्राप्त होगी और नई चेतना मिलेगी जिससे पढ़ने में अधिक एकाग्रता आएगी। ऐसे छात्र कम समय पढ़कर भी अन्य छात्रों से आगे रहते हैं अर्थशास्त्र का सिद्धांत " लॉ ओफ डिमनिर्शिंग रिटर्न" छात्रो के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार शुरु के घंटे मे किये गये कार्य का फल बाद के घंटे मे लिए जाने वाले कार्य के फल से अधिक होता है। ज्यों ज्यों समय बीतता है प्राप्त होने वाला लाभांश कम होता जाता है और एक समय आता है जब परिश्रम ज्यादा करने पर भी लाभांश नगण्य होता है। अत: छात्रों को एक साथ लम्बे समय पढ़ने के स्थान पर दो तीन घन्टें के अन्तराल पर थोड़ा विश्राम करना चाहिए।

इस विश्राम के समय यदि कोई परिश्रम जैसे साइकिल चलाना, दौड़ना, खेलना या घरेलू कार्य करना अधिक लाभकारक होगा। इसका कारण सीधा है। इन कार्यों में व्यस्त होने पर आपके दिमाग को पूर्ण आराम मिलेगा जो खाली बैठने या दूरदर्शन यंत्र देखने से नहीं मिलेगा क्योंकि इन दशाओंमें मनमें तरह-तरह के विचारों का आना जाना लगा रहेगा। छात्रों को चाहिए अपने समय का ऐसे वितरण करें कि मानसिक कार्य और शारीरिक श्रम करने के समय में तालमेल बैठ जाये और शरीर तथा दिमाग दोनों ही स्वस्थ बने रहें। अंग्रेजी भाषा की कहावत "ए हेल्दी माइन्ड इन ए हेल्दी बॉडी" आप लोगों का आदर्श वाक्य होना चाहिए।अक्सर माँ - बाप पढ़ने वाले बच्चों को सिर्फ अध्ययन में ही लगाए रखते हैं जिसके फलस्वरुप इन बच्चों को अधिक मेहनत के बाद भी उतना ज्ञानार्जन नहीं होता जितना उन छात्रों को जो कम समय, एकाग्रता से पढ़ते हैं। हर समय अध्ययन में व्यस्त रहने से ऐसे छात्र शारीरिक तौर पर मध्यम स्वास्थ्य वाले होते है। जिसका असर उनके दिमाग की ग्राह्य शक्ति (एबशोर्प्शन पावर) पर भी पड़ता है। ऐसे छात्र जो भी याद करते हैं। वह कुछ समय तो याद रहता है परन्तु बाद में भूल जाता हैं जिससे उन्हें एक ही विषय (टॉपिक) को बार-बार तैयार करना पड़ता है। इसप्रकार उन्हें अधिक श्रम के बदले कम लाभांश मिलता है।

अत: सभी व्यक्तियों को यह जान लेना चाहिए कि उन्हें मानसिक एवं शारीरिक, दोनों के विकास की आवश्यकता है और ये दोनों विकास एक-दूसरे पर निर्भर हैं। अत: उनमें समन्वय, तालमेल और संतुलन बनाना अति आवश्यक है। स्वस्थ शरीर एवं विकसित दिमाग ही जीवन में सच्चा सुख प्रदान करते हैं।

प्रदीप कुमार शर्मा
निरीक्षक

नया नया

देखा रुपहला मन मानवी का नया नया
है मन नया नया और सर्जन नया - नया
दिलमें विचार का सर्जन नया - नया
सर्जन नया नया और विसर्जन नया - नया
दिन नया और प्रतिदिन का वर्तन नया - नया
चिंता नहीं रही, रहा है चिंतन नया - नया
दिल एक और दिल का बंधन नया - नया
बंधन से दलीलों का समर्थन नया - नया
मैं सुनती हुं स्नेह का गुंजन नया - नया
कैसा है रुपहला मानवी का मन नया - नया

ज्ञान

ज्ञान है, पारसमणि लोखंड (लोहा) का कंचन करे
झूमते वेरान में एक झूमता उपवन करे
पत्थरों को एक अजायब रुप दिया "रत्न" का
और अलौकिक शक्ति से युग का भी परिवर्तन करे।

रंजना जयेन्द्रभाई गोकली
निरीक्षिका

इसे मत पढ़िये यह बकवास है ।

मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि इसे मत पढ़िये यह कोरी बकवास है। यह लेख केवल इसलिये लिख रहा हूँ कि मैं अपनी आदत से मजबूर हूँ। और इसे पढ़ने के बाद आप मुझे बुरा भला कहें इससे बेहतर है कि मैं आपको पहले ही चेतावनी दे दूं कृपया इसे मत पढ़े। देखिये आप मेरी बात नही मान रहे हैं, और आगे पढ़े जा रहे हैं। इसको पढ़ने से आप अपना समय और अपनी शक्ति दोनों ही बरबाद कर रहे हैं। इसे पढ़ने से तो बेहतर है कि अगर आप कार्यालय में हैं तो आप थोड़ा सरकारी काम कर सकते हैं इतने समय में आप एक या दो फाइल निपटा सकते हैं। पर साहब आप मेरी बात ही सुनने को या समझने को तैयार नहीं हैं। आप पढ़े जा रहे हैं मै सच कह रहा हूं यह एकदम बकवास है। इसको पढ़ने से आपको कुछ भी हासिल नहीं होगा न कोई शिक्षा ही मिलेगी, न कोई सामान्य जानकारी बढ़ेगी न ही कोई मनोरंजन होगा।

अरे आप तो जिद पकड़ के बैठ गये कि चाहे कुछ भी हो आप इसे पढ़ेंगे अच्छा खैर एक काम की बात सुनिये अगर आप घर में हैं तो इसको पढ़ना बन्द कीजिये और जरा बच्चों की तरफ ध्यान दीजिए उनका होमवर्क देखिए तो बराबर कर रहे हैं कि नहीं उन्हें टेस्ट में कितने नम्बर मिले हैं, श्रीमान जी मेहरबानी कर के जरा आप अपने बच्चों की तरफ ध्यान दीजिये ये आपके बुढ़ापे की लाठी हैं। कहीं ऐसा न हो कि ये आपको बुढ़ापे में सहारा बनने के बजाए आपकी आशाओं की हड्डियां तोड़ दें। याने आपके सपनों का महल ताश के पत्तों की तरह ढह जाऐ। मैं क्या कह रहा हूं समझ रहे हैं न आप.....

हद हो गई साब मेरे इतना समझाने के बावजूद भी आप अभी तक इसे पढ़े जा रहे हैं।

.... तौबा...तौबा.....आप बहुत जिद्दी हैं।..... अरे हां .....आप ऐसा क्यूं नहीं करते इस पत्रिका में बहुत सी अच्छी - अच्छी सामग्रियाँ भी हैं प्रतिभाशाली कवियों की कवितायें हैं। (बस एक को छोड़कर) मन को प्रसन्न कर देने वाले चुटकुले हैं। जीवन को सफल बनाने वाले शिक्षात्मक लेख हैं। पर्यटन के अति लुभावने संस्मरण हैं। मेरी मानिये इसे छोड़ कर आप उन्हें पढ़िये अच्छी रचनाएं दिल और दिमाग की खुराक होती हैं। ... लेकिन साब अब तो इन्तेहा हो गई आप कुछ सुनने को ही राजी नहीं हैं। देखिये जनाब यह जो आप पढ़ रहे हैं न यह एकदम निराधार, नामाकूल सी हिमाकत है। लेकिन साब मैं आपको मान गया कि आप बहुत पक्के इन्सान हैं जो ठान ली सो ठान ली यानें इसे पूरा पढ़ेगें, नहीं मानेंगे। लेकिन इसमें आपका दोष नहीं है। यह इन्सानी फितरत है मानव प्रवृति है।

हमें जिस चीज के लिये मना किया जाता है हम तो वही करते हैं। जिस कोने में लिखा होता हैं यहां

थूकना मना है वहीं थूक की पिचकारियां ज्यादा होती हैं। मै भी श्रीमान क्या करुँ , मैं चाहता था कि आप इस बकवास को न पढ़े आपका समय बरबाद न हो। आपकी शक्ति नष्ट न हो लेकिन आप साब मेरी क्यूं सुनेंगे ? खैर, साब मत मानिये मेरी बात और आप पढ़ते रहिये भई मेरा यह फर्ज था कि मैं आपको समझाऊँ और मैंने समझाने का पूरा प्रयास किया और मेरा दावा है कि इसे पढ़ने के बाद आपको खुद अहसास होगा कि आपने खामख्वाह यह लेख पढ़ा जिसका न सर था न पैर। अब आपको दुख होगा कि आपने मेरी बात पहले ही क्यूं नहीं मान ली ? क्या ख्याल है.....

अबरार सैय्यद
अधीक्षक

आँखे

पल – पल मिलती आँखें
कहती एक दूजे से दिलकी बातें
इन बातों से मुलाकातों से
हम जानकर भी अंजान बन जाते
और इस दुनिया की रस्में निभाते।
नज़रे मिलीं पलकें झुकी
लब कंप कपाए
हम खो गये ख्वाबों में
ख्यालों में
उनको साथ लिये
आँखें खुली तो हमने पाया
तन्हा थे तन्हा रह गये।

अनिल शर्मा
अधीक्षक

"तुम्हें भूल पाता मैं कैसे ?"

तुम चले गये दूर मुझसे,
मैं कोई गीत बनाता कैसे ?

तुम इतना याद आए मुझको,
तुम्हें भूल पाता मैं कैसे ?

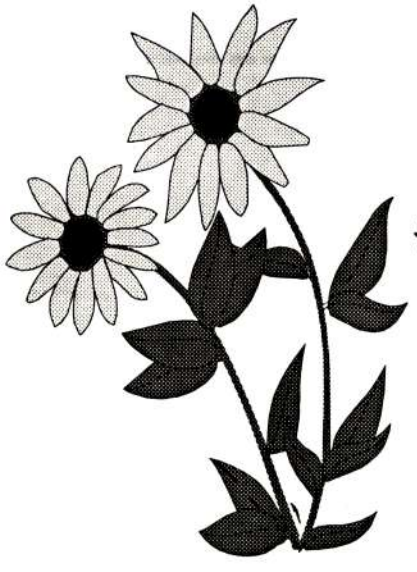

जल से भीगी तेरी जुल्फें,
दूर कहीं घिर आई घटाएँ,
तेरी हिरनी सी चंचल आँखें,
मेरे दिल में तीर चुभाँए
चित्त बिखी सी यादें,
मुझको अपने पास बुलाएँ,
तेरे रुप में खोया ऐसे
तुम्हें भूल पाता मैं कैसे ?

इन यादों से तुम कह दो
न मुझको अब और सताएँ,
फूलों से इस नाजुक दिल को
न काँटो का हार पहनाएँ
मेरी आंख का हर एक आंसू
बहते - बहते तुम्हें बुलाए
इन आंसू में तेरी छवि है
तुम्हे भूल पाता मैं कैसे ?
मैं कोई गीत बनाता कैसे.....

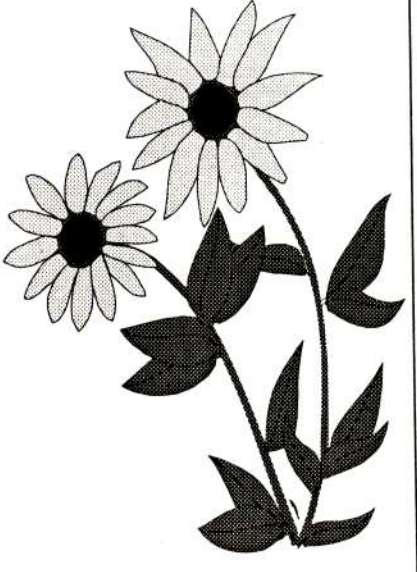

अजीत आर. सिंह
निरीक्षक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II में हिन्दी सप्ताह का आयोजन - वर्ष 2004-05

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के दिनांक 21-04-1987 का कार्यालय ज्ञापन संख्या 1/14034/2/87-रा.भा. (क-1) (परिपत्र सं. 2/87) के अनुसरण में, हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 2005 के अवसर पर इस आयुक्तालय में दिनांक 14-9-2005 से 21-09-2005 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया।

2) इस दौरान आयुक्तालय स्तर पर निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :
   - क - अनुवाद प्रतियोगिता (वर्ष 'क' एवं 'ख' के अधिकारियों के बीच)
   - ख - हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता
   - ग - हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
   - घ - हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

3) उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने वाले सफल प्रतियोगियों को क्रमशः रु. 1700/-, रु. 1400/-, रु. 1200/-, रु. 1000/- एवं रु. 800/- के और रु. 600/- की दर से दो सांत्वना प्रत्येक प्रतियोगिता में नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

4) उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतियोगियों के नाम नीचे बताए अनुसार हैं।

क्र.स.	अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम एवं पदनाम	स्थान	राशि रु.
	अनुवाद प्रतियोगिता		
01	संजय राठी, संयुक्त आयुक्त	प्रथम	1700/-
02	बी. आर. त्रिपाठी, आयुक्त	द्वितीय-क	1400/-
03	पी. के. शर्मा, निरीक्षक	द्वितीय-ख	1400/-
04	पी.एल. पंचाल, अधीक्षक	तृतीय	1200/-
05	एम.आर. त्रिवेदी, अधीक्षक	चतुर्थ	1000/-
06	बी.आर. परमार, अधीक्षक	पंचम	800/-
07	श्रीमती रश्मि वारिया, अधीक्षक	सांत्वना-1	600/-
08	बी.एम. चौहान, अधीक्षक	सांत्वना-2	600/-

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

01	श्रीमती संगीता अधिकारी, निरीक्षक	प्रथम	1700/-
02	वी. बी. माथुर, अधीक्षक	द्वितीय	1400/-
03	पी. के. शर्मा, निरीक्षक	तृतीय	1200/-
04	पी.एल.पंचाल अधीक्षक	चतुर्थ	1000/-
05	नीरजपाल, निरीक्षक	पंचम	800/-
06	अजीत आर. सिंह, निरीक्षक	सांत्वना–1	600/-
07	संजय आर. शुक्ल, व.कर सहायक	सांत्वना–2	600/-

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

01	नीरजपाल, निरीक्षक	प्रथम	1700/-
02	पी. के. शर्मा, निरीक्षक	द्वितीय	1400/-
03	पी.एल.पंचाल अधीक्षक	तृतीय	1200/-
04	बी.एम. चौहान, अधीक्षक	चतुर्थ	1000/-
05	श्रीमती रश्मि वारिया, अधीक्षक	पंचम	800/-
06	श्रीमती संगीता अधिकारी निरीक्षक	सांत्वना–1	600/-
07	संजय आर. शुक्ल, व.कर सहायक	सांत्वना–2	600/-

हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता

01	पी. के. शर्मा, निरीक्षक	प्रथम	1700/-
02	संजय आर. शुक्ल, व.कर सहायक	द्वितीय	1400/-
03	नीरज पाल, निरीक्षक	तृतीय	1200/-
04	पी.एल. पंचाल, अधीक्षक	चतुर्थ	1000/-
05	श्रीमती संगीता अधिकारी	पंचम	800/-
06	आर. जे. परमार, अवर श्रेणी लिपिक	सांत्वना–1	600/-
07	वी.बी. माथुर, अधीक्षक	सांत्वना–2	600/-

5) समापन समारोह : हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल प्रथम तीन प्रतियोगियों को 30-11-2005 को आयोजित स्थापना (रेज़िंग) दिवस के अवसर पर माननीय श्री देवेन्द्र दत्त, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क, अहमदाबाद, गुजरात क्षेत्र के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी सप्ताह का आयोजन - 2005

30-11-2005 को आयोजित स्थापना (रेजिंग) दिवस के समारोहमें 14 सितम्बर 2005 के अवसर पर हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन सफल प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए माननीय मुख्य आयुक्त श्री देवेन्द्र दत्त, सीमा शुल्क, अहमदाबाद गुजरात क्षेत्र ।

अधरों पर गीत

पुष्पों पर भौरों का गूंजन
मदिर वायु का मूक प्रलोभन
सांसों में भीषण आंदोलन
प्रिय, तुम ऐसे में भी गुमसुम ?

पायल की वह मीठी रुनझुन
खन–खन चूड़ी कंगन की धुन
अधरों पर गीतों की गुनगुन
प्रिय, तुम ऐसे में भी गुमसुम ?

रात–दिवस का मिलन सुहावन
देख हृदय करता है नर्तन
आज तुम्हें सर्वस्व समर्पण
प्रिय, तुम ऐसे में भी गुमसुम ?

इन तपते अधरों का कंपन
नयनों का सारा आकर्षण
अंगों का अपूर्व सम्मोहन
प्रिय, तुम ऐसे में भी गुमसुम ?

अजीत आर. सिंह
निरीक्षक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II
स्थापना (रेज़िंग) दिवस : 30-11-2005

1. इस आयुक्तालय द्वारा 30-11-2005 को टेगौर हाल, अहमदाबाद में स्थापना(रेज़िंग) दिवस मनाया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में श्री देवेन्द्र दत्त, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क, गुजरात क्षेत्र एवं सम्मानीय अतिथि श्री एस.सी. माथुर, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद क्षेत्र, विभागीय साथीगण, अहमदाबाद स्थित केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण और इस आयुक्तालय के कर्मचारी एवं अधिकारी अपने परिवार के सदस्यों सहित उपस्थित थे।

2. यह दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है, और रहेगा, क्योंकि 01-11-2005 को इस आयुक्तालय ने स्वतंत्र रुप से कार्य करते हुए तीन वर्ष पूर्ण किए हैं। इस दौरान आयुक्तालय द्वारा की गई कारगर कार्यवाहियों से राजस्व में वृद्धि हुई है। हालाँकि आयुक्तालय से कई फार्मास्यूटिकल इकाईयाँ चली गई और कई प्रोसेसिंग इकाईयाँ उत्पाद शुल्क नियंत्रण से मुक्त हो गईं। इसके बावाजूद आयुक्तालय ने प्रशंसनीय प्रगति की।

3. वर्ष 2002-2003 में 248, 2003-04 में 213 एवं 2004-2005 में 1090 न्यायनिर्णयन आदेश जारी किए गए। इसी प्रकार निवारक कार्यो से वर्ष 2002-2003 में रु. 1.52 करोड, 2004-2005 में रु. 4.79 करोड की वसूली की गई। वर्ष 2002-03 में 436 से बढ़कर 2004-05 में 1193 आदेशों की जांच आर.आर.ए. शाखा द्वारा की गई। लेखा कार्य की बात करें तो 2002-03 में 19 लाख से बढ़कर 2004-05 में रु. 5.20 करोड़ लेखा परीक्षा पैराओं में से वसूली की गई है। अहमदाबाद आयुक्तालय - II राष्ट्रीय स्तर पर राजस्व लेखा में इस वर्ष तृतीय स्थान पर रहा है।

04 इस आयुक्तालय में दिनांक 07-11-2005 से 11-11-2005 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान, वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और उसमें निम्न अधिकारियों को सफल घोषित किया गया :

	सर्वश्री	स्थान	राशि
01.	संजय राठी, संयुक्त आयुक्त	प्रथम	1500/-
02.	पी.एल. पंचाल, अधीक्षक	द्वितीय	1200/-
03.	के. के. सिंह, सहायक आयुक्त	तृतीय	800/-

दिनांक 07-11-2005 को ईमानदारी और पारदर्शिता संबंधी प्रतिज्ञा की गई। स्थापना (रेज़िंग) दिवस के अवसर पर सफल प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया।

05 इस अवसर पर आयुक्तालय में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए निम्न अधिकारियों / कर्मचारियों को मुख्य अतिथि के कर कमलों से प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए :-

	अधिकारी का नाम सर्वश्री	संवर्ग	सीसीई-II में कार्यग्रहण का का दिनांक
01	बी.एम.चौहान	अधीक्षक	01-11-2002
02	आर. एन. सावंत	अधीक्षक	24-04-2003
03	श्रीमती बीजल एच. त्रिवेदी	निरीक्षक	11-07-2005
04	सुधीर कुमार	निरीक्षक	01-11-2002
05	ए.बी.अमीन	निरीक्षक	01-11-2002
06	के. बी. मुदलीयार	निरीक्षक	01-11-2002
07	जे. बी. दवे	प्रशासन अधिकारी	01-11-2002
08	जे.टी. मेहता	उप. कार्यालय अधीक्षक	01-11-2002
09	सी.वी. बेतालावाला	कर सहायक	01-11-2002
10	वी.के. मेणात	हेड हवालदार	01-11-2002
11	जगदीश सोलंकी	हवालदार	01-11-2002
12	यू.एम.पठान	ड्राइवर	01-11-2002

06 इस आयुक्तालय में दिनांक 14-09-2005 से 21-09-2005 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :

1) अनुवाद प्रतियोगिता (वर्ग 'क' एवं 'ख' अधिकारियों के बीच)
2) हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता
3) हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
4) हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि

प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर क्रमशः रु. 1700/-, रु. 1400/-, रु. 1200/-, रु. 1000/- एवं स. 800/- के और दो सांत्वना रु. 600/- की दर से पुरस्कार रखे गए जो इस अवसर पर मुख्य अतिथि के कर कमलों से प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त 30-11-2005 को सेवा निवृत्त हो रहे श्री.डी.जे. सोलंकी, सहायक आयुक्त को सम्मानित किया गया।

07 वर्ष 05-06 की उपलब्धियों के आधार पर, अहमदाबाद-II आयुक्तालय शीघ्र ही आई. एस. ओ. 9001 - 2000 के प्रमाणपत्र द्वारा आभूषित किया जाने वाला है।

30-11-2005 को आयुक्तालय द्वारा स्थापना (रेज़िंग) दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र दत्त, मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क, अहमदाबाद, गुजरात क्षेत्र एवं सम्मानीय अतिथि श्री सुभाष चंद माथुर, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद क्षेत्र उपस्थित थे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। (झलकियाँ)

30-11-2005 को आयोजित स्थापना (रेज़िंग) दिवस के अवसर पर आयुक्तालय में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए अधिकारियों / कर्मचारियों को प्रशस्ति प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए माननीय मुख्य आयुक्त श्री सुभाषचंद माथुर, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अहमदाबाद क्षेत्र ।

औरत

मैं क्यूं भूल जाती हूं
कि मैं एक औरत हूं
और एक औरत, चुप रहती है।
औरत बोलती तभी है
जब उसे, बोलने को कहा जाये,
वरना औरत, चुप रहती है
और सब कुछ सहती है
उसकी अपनी इच्छाएं
अपनी तमन्नाएं,
सब मौन रहती हैं,
क्योंकि अगर
वे मुखर होती हैं
तो औरत, स्वयं का ह्रास करती हैं
इसलिए औरत चुप रहती है
और सब कुछ सुनती है।
क्योंकि अगर
वो इस चुप्पी
को तोड़ने के लिए भी
कुछ कहती है,
तो फिर,
वो-एक औरत-
एक आदर्श भारतीय औरत
नहीं रहती है।

कविता भट्नागर
उपायुक्त

"वेश-भूषा"

1965 में नडियाद विभाग में नियुक्ति हुई। सहकर्मचारी तथा अफसर प्रतिवर्ष मनोरंजन कार्यक्रम का 26 जनवरी तथा 15 अगस्त के अवसर पर आयोजन करते थे। सहपरिवार सभी प्रस्तुत रहते और सभी के लिए खेलकूद, सुंदर - लेखन, नाटक, गीत - संगीत, वेशभूषा वगैरह प्रतियोगिताएँ होती थीं। सभी हिस्सा लेते थे। रंगमंच कार्यालय के भवन में ही बनता या "टाउन-हॉल" में आयोजन होता था। उच्च हस्तियों को आमंत्रित किया जाता था। मैने भी वेशभूषा तथा चित्रपट - गीत स्पर्धाओं में हिस्सा लिया था। वेशभूषा प्रतियोगिता में हिस्सा कुछ निम्नरुप से लिया।

"मार्डन गर्ल" लंबी बाहों का कुर्ता तथा सलवार पहनें। गले में दुपट्टा डाला। श्रृंगार किया। माथे पर "विग" लगाई और नारीरुप धारण कर लिया। जब घोषित किया गया - "मार्डन-गर्ल", तो रंगमंच पर प्रवेश किया। कन्याओं की तरह नखरे-चाल किए तथा एक फिल्मी गीत स्वर बदलकर कुछ इस तरह गाया :

"मैं शायद तुम्हारे लिए अजनबी हूँ मगर चांद तारे मुझे जानते हैं।"

निर्णायकगणों के पास से जब गुणपत्रक लिए गए तो "मोर्डन-गर्ल" के सामने किसी ने गुण नहीं लिखे थे और कहा कि "लड़की, लड़की बनकर रंगमंच पर आई उसमें क्या वेशभूषा प्रतियोगिता हुई। "तब संचालकों ने स्पष्टता की वह लड़की नहीं अपने कर्मचारी "शर्मा" थे। सभी बहुत ही आश्चर्यचकित हो गए और बहुत प्रसन्न हुए तथा 10 में से 10 गुण दे दिये। मुझे प्रथम क्रमांक से पारितोषिक दिया गया।

आज भी वह दिन याद आता है तो अतिप्रसन्नता होती है। आज कल ऐसे कार्यक्रम बहुत ही कम होते हैं। मेरी सभी अधिकारी गण से यही विनंती है कि कार्यालय के कार्य में सफलता पाने की पूरी कोशिश करें और नाम और शान कमाएँ। लेकिन आपमें से अनेकों में कलाकार भी छुपा है उसे बाहर आने दे और मनोरंजन से जीवनशैली प्रभावित करें तथा जीवन को सही अर्थ में जिएँ और एक उत्सव की तरह हमेशा मनाते रहें तथा खुश रहें।

रमेश आत्मारामाणी
सेवा निवृत्त अधीक्षक

"पैसा ही पैसा"

सारा यह जमाना, बस पैसा ही पैसा,
आया कैसा जमाना, अब पैसा ही पैसा,

यहाँ-वहाँ, चारों तरफ पैसा ही पैसा
सारे युग में अब केवल पैसा ही पैसा ॥

पानी का पैसा, खाने का पैसा,
दावत में पैसा, मैय्यत में भी पैसा ॥

शादी - ब्याह पर पैसा, जन्म-मृत्यु पर पैसा,
खेलों में भी पैसा, मेलों में भी पैसा ॥

व्यापार में पैसा, बाजार में भी पैसा,
त्यौहार पर पैसा, व्यवहार में भी पैसा ॥

कहाँ-कहाँ नहीं है, छुपा हुआ पैसा,
अब तो प्रश्न पूछने पर भी चाहिए पैसा ॥

प्रेम, प्यार, महोब्बत, देशप्रेम तो ऐसा वैसा
अब तो केवल है, चारों युग में छाया हुआ पैसा ॥

वाय. बी. त्रिवेदी
निरीक्षक

आइए हिन्दी में काम करें(संकलन)

पृ.सं.

श्री क. ख. ग.

से प्राप्त अर्जित छुट्टी का आवेदन पत्र दिनांक .....

<u>प्रस्तुत है :-</u>

श्री क.ख.ग. प्रशा. अधिकारी ने दिनांक :..... से ..... तक ..... दिन की अर्जित छुट्टी मांगी है।

कृपया श्री क.ख.ग. प्रशा. अधिकारी की ..... दिन की अर्जित छुट्टी मंजूरी के लिए प्रस्तुत है।

यदि उचित हो तो श्री क.ख.ग. प्रशा. अधिकारी का कार्यभार श्री च. छ. ज. अधीक्षक को दिया जाए।

आदेश अनुसार श्री क.ख.ग. प्रशा. अधिकारी का कार्यभार श्री च. छ. ज. अधीक्षक को दिया जाए।

छुट्टी आदेश आपके हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है।

कर सहायक *उप का. अधी.* *प्र.अ. (मु.)* *संयुक्त आयुक्त*

आयुक्त का कार्यालय, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क
अहमदाबाद - II

फा.स. अहमदाबाद, दि : _____

सेवा में,

.....
.....
.....

विषय : निर्यात का सबूत स्वीकार करने के संबंध में।

महोदय,

उप आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शल्क (निर्यात), अहमदाबाद - II ने निम्नलिखित सीटी - I के प्राप्ति निर्यात का सबूत स्वीकार कर लिया है :-

क्र.स.	सी.टी. I. सं. एवं. दिनांक	ए.आर.ई.- I संख्या	विनिर्माता का नाम	शामिल शुल्क की रकम

अत : आप अपने चालू बंधनपत्र लेखा (रनिंग बाण्ड एकाउन्ट) में उपर्युक्त रकम की जमा ले सकते हैं।

अधीक्षक/सहायक आयुक्त की गोल मोहर
मूल/प्रति/दूसरी प्रति/ तीसरी प्रति

भवदीय,

अधीक्षक (तकनीकी)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - II

प्रतिलिपि प्रेषित :

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II

छुट्टी आदेश संख्या /200

अहमदाबाद, दिनांक / /200

श्री ..... सहायक आयुक्त/ अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद-II को एतदद्वारा दिनांक ..... से दिनांक ..... तक .....दिन की अर्जित छुट्टी / परिवर्तित छुट्टी, जिसके पहले दिनांक ..... और बाद में दिनांक ..... जोड़ने की अनुमति के साथ मंजूर की जाती है।

श्री ..... सहायक आयुक्त/ अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद -II..... उपर्युक्त छुट्टी की अवधि के दौरान अपने कार्यभार के साथ अतिरिक्त श्री ..... सहायक आयुक्त/अधीक्षक का कार्यभार भी देखेंगे।

श्री ..... सहायक आयुक्त/ अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद-II द्वारा अपनी तैनाती के उसी स्थान पर लौटने की संभावना है, जहां से वे छुट्टी पर गये थे।

प्रमाणित किया जाता है कि श्री ..... सहायक आयुक्त, अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद-II उक्त अवधि के दौरान अर्जित छुट्टी / परिवर्तित छुट्टी पर गये नहीं होते तो उक्त पद पर स्थानापन्न रुप में बने रहते।

संयुक्त आयुक्त / प्रशासन अधिकारी
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क
अहमदाबाद - II

फा. संख्या / /200 स्थापना अहमदाबाद, दिनांक / /200

प्रतिलिपि प्रेषित :

01. मुख्य लेखा अधिकारी / वेतन लेखा अधीकारी, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद-II
02. उप आयुक्त/सहायक आयुक्त/अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, एवं सीमा शुल्क, मण्डल ..... अहमदाबाद - II
03. श्री ..... उप आयुक्त/सहायक आयुक्त/अधीक्षक
04. छुट्टी आदेश ..... गार्ड फाइल।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II

पत्र संख्या : ..... अहमदाबाद, दिनांक .....

सेवा में,

मुख्य लेखा अधिकारी (मुख्यालय)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क,
अहमदाबाद - II

विषयः- _____

_____

_____

महोदय,

इसकेसाथ निम्नलिखित बिल की दो प्रतियां भेजी जाती हैं / भेजे जाते हैं उनकी रकम निकालकर शीघ्र ही पार्टी (पक्षकार) को भुगतान कर दी जाय । अपर / उप आयुक्त (का. व स.) तथा प्रशासनिक अधिकारी (मुख्यालय) अहमदाबाद - II ने उक्त बिल पहले से ही मंजूर कर दिए हैं ।

क्र. सं.	बिल संख्या एवं दिनांक	रकम	पक्षकार का नाम

संलग्न : यथोपरि ।

भवदीय,

प्रशासन अधिकारी (मुख्यालय)
के.उ.शु. अहमदाबाद - II

विभागाध्यक्ष/वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा आम तौर पर फाइलों में प्रयुक्त वाक्यांश

1	I agree.	मैं सहमत हूँ।
2	I disagree.	मैं असहमत हूँ।
3	Please see me.	कृपया मुझसे मिलें।
4	Please discuss.	कृपया मुझसे चर्चा करें।
5	Sanctioned.	स्वीकृत।
6	Approved.	अनुमोदित।
7	Leave granted.	अवकाश स्वीकृत।
8	Expedite action.	शीघ्र कार्यवाही करें।
9	May be permitted.	अनुमति दी जाये।
10	All concerned to note.	सभी सम्बन्धित व्यक्ति नोट करें।
11	Appropriate action may be taken.	उपयुक्त कार्यवाही की जाय।
12	Delay cannot be waived.	विलम्ब को माफ नहीं किया जा सक्ता।
13	Dealy should be avoided.	विलम्ब न किया जाएं।
14	Comments may be called for	..से विचार आमंत्रित किए जाएं।
15	Concurrence of .... may be obtained.	..की सहमति प्राप्त की जाएं।
16	Action may be taken as proposed.	..के नोट में..के द्वारा यथा प्रस्तावित कार्यवाही की जाए।
17	Summary of the case my be put up.	इस मामले का सार प्रस्तुत किया जाए।
18	As modified	यथा संशोधित।
19	Attention is invited to....	..की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है।
20	Examine the proposal in the light of observation at 'A'.	"क" के प्रेषक को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव का परीक्षण करें।
21	Facts given at page no..... may be seen.	पृष्ठ सं..... पर दिए तथ्य देखे जाएं।
22	For general circulation.	सामान्य परिचालन के लिए।
23	Interim reply should be sent.	अंतरिम उत्तर भेजा जाना चाहिए।
24	Facts of the case may be put up / intimated.	मामले के तथ्य प्रस्तुत किए जाएं / सूचित किया जाए।
25	Delay may be explained.	विलम्ब का कारण बताया जाएं ।
26	Lenient view may be taken.	उदार दृष्टिकोण अपनाया जाएं ।

27	He/they may be informed accordingly.	उसे/उन्हें तदनुसार सूचित किया जाए।
28	Minutes may be drawn up.	कार्यवृत्त तैयार किया जाए।
29	Office may note carefully.	कार्यालय ध्यान पूर्वक नोट करें।
30	Orders may be complied with.	आदेशों का अनुपालन किया जाए।
31	Seen and returned thanks.	देखकर वापस किया, धन्यवाद।
32	Comments not necessary.	टिप्पणी आवश्यक नहीं।
33	Issue instructions forth with.	तत्काल अनुदेश जारी किए जाएं।
34	On return from tour.	दौरे से वापस आने पर।
35	Note for cabinet/cabinet committee.	मंत्रिमंडल / मंत्रिमंडल समिति के लिए नोट।
36	With best wishes/with regards.	शुभकामनाओं सहित / सादर।
37	Reply should be sent in Hindi.	उत्तर हिन्दी में भेजा जाना चाहिए ।
38	Pending cases be disposed of early.	अनिर्णीत मामले शीघ्र निपटाए जाएं।
39	Reply today/early/immediately/ without delay.	उत्तर आज ही / शीघ्र / तत्काल /अविलम्ब भेजें।
40	Please circulate among all the officers.	कृपया सभी अधिकारियों को परिचालित करवाएं।

Commonly used phrases on the files by the Heads of Departments / Senior Officials.

कौन अमीर ? कौन गरीब ?

एक धनवान पिता अपने बेटे को गरीब किसान की झोपडी दिखाने ले गया। वह अपने बेटे को बताना चाहता था कि लोग कितने गरीब होते हैं। उन्होंने किसान की झोपडी में एक दिन और एक रात बीताई। वापस आते हुए पिताने पुत्र से पूछा, "यात्रा" कैसी रही ?" पुत्र ने जवाब दिया बहुत अच्छा, पिताजी। तूने देखा कि लोग कितने गरीब होते हैं ? इस यात्रा से तूने क्या सीख पाई - पिताने पूछा ? बेटे ने कहा मैंने देखा कि अपने पास कुत्ता है, परन्तु उनके पास चार हैं। अपने पास एक छोटा स्विमिंग पुल है, परन्तु उनके पास बडी नदी है। हमने अपने बगीचे में रोशनी के लिए विदेशी लेम्प लगाया है, किन्तु उनके पास आकाश के लाखों तारे हैं। अपने घर में से केवल सामने वाले घर की दिवाल दिखाई देती है, लेकिन उनके घर में से दिखाई देता है पूरा क्षितिज। पिता ने पुत्र को जिंदगी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने का महत्व का पाठ सीखा दिया था। इस छोटी सी वार्ता का तात्पर्य यही है कि व्यक्ति गरीब या अमीर अपने दृष्टिकोण से ही होता है।

संकलन कर्ता

एस.एम.दास

सहायक मुख्य लेखा अधिकारी

(दिव्य भास्कर 29 अगस्त से लिया गया)

आयुक्तालय द्वारा पुरस्कृत रचनाएं

(क) हिन्दी का भविष्य सुनहरा है

"है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमी हरी भरी ।
हिन्दी है राष्ट्रभाषा लिपि है नागरी ॥"

हमारी इस भूधरा पर मानव ही एसा श्रेष्ठ प्राणी है जिसे अपने भावों को व्यक्त करने के लिये भाषा का वरदान प्राप्त हुआ है । भाषा मनुष्यों द्वारा उच्चरित होने वाले ध्वनि संकेतों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा विशेष समुदाय के लोग विचारात्मक स्तर पर परस्पर संप्रेषण करते हैं। बिना भाषा के मानव समाज का अस्तित्व असंभव है इसके बिना सामाजिक परिवेश के कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम धन्य हैं कि हमारा जन्म भारत में हुआ, अतः हमें हिन्दी मातृभाषा के रुप में ऐसा शस्त्र प्राप्त हुआ है जिससे हम धन्य हो उठे हैं।

14 सितम्बर उन्नीस सौ उनपचास में हिन्दी को भारत की मातृभाषा के रुप में स्वीकारा गया भारत के संविधान के 343 के अनुच्छेद में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रुप में मान्यता प्राप्त हुई। किसी भी देश में सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा ही राष्ट्रभाषा कहलाती है। हिन्दी अत्यंत ही मोहक सुगम्य, सुबोध, बोधगम्य, विकसित, संपूर्ण वैज्ञानिक, उत्कृष्ट, शास्वत व मात्राओं से अलकृंत सचिदानन्द स्वरुप है।

किसी भी समाज के बौद्धिक तथा मानसिक विकास के लिये राष्ट्रभाषा आवश्यक है। मनुष्य चाहे जितनी भी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिये अपनी मातृभाषा की ही शरण लेता है, इससे उसे मानसिक संतोष की अनुभूती होती है।

जिस प्रकार श्रीमान भारतेन्दू हरीशचंद्र ने कहा है कि

"निज भाषा उन्नती अहैं सब उन्नती को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय शूल ॥
अंग्रेजी पढकर जदपी सब गुण होत प्रवीण,
पै निज भाषा ज्ञान के रहत हीन के हीन ॥

भारत में साठ करोड़ आबादी हिन्दी भाषा बोलती व समझती है, अतः सिर्फ हिन्दी भाषा ही ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया जा सकता है।

"आदि जो अक्षर जगत में ताकर सब विस्तार
हिन्दी कृपा से पाइये, सत्य नाम निज सार।

भारत वर्ष की प्राचीन भाषा संस्कृत है और यही हिन्दी की जननी है। विश्व में सर्वश्रेष्ठ व संपूर्ण भाषा संस्कृत है और हिन्दी संस्कृत से ही उद्धरित हुई है। अतः यह संपूर्ण भाषा है।

न शक्यते वर्णयितुं गिराहदा,
तदन्तः कारण स्वयं गुद्धाते ।
तैनैष वृणुते तेन लभ्यः ।

अतः जो मनुष्य इसका वरण कर लेता है उसे यह शीघ्र प्राप्त हो जाती है।

भारत वर्ष में हिन्दी सर्वत्र व्यापक है। वे लोग अविवेक के द्योतक है जो इसका विरोध करते हैं। आज भी कई राज्यों ने हिन्दी को मातृभाषा का दर्जा नहीं प्रदान किया है परन्तु हिन्दी भाषा के संवहक ज्ञान एवं कर्त्तव्य पद पर आरुढ़ हैं। हिन्दी भाषा का विकास श्रृंखलाबद्ध तरीके से इसके संवहको द्वारा अग्रसर है। वह वक्त दूर नही जब हिन्दी विश्व में अपने संवाहकों के पंख पर उड़कर दैदिप्यमान हो उठेगी।

हिन्दी संपूर्णरुप से ध्वन्यात्मक, अनुभवात्मक एवं वर्णात्मक है।
हिन्दी भाषा में अनेकों भाषाऐं व बोलियां सम्मिलित हैं।
हिन्दी का व्याकरण सरल एवं प्रभावी है,
हिन्दी भारत की राष्ट्रीय एकता का माध्यम रही है,
हिन्दी अन्य भाषाओं की अपेक्षा सरल है।
यह संसार की अन्य भाषाओं को लिपिबद्ध व उच्चारित कर सकती है। यह देश की संपर्क भाषा है।
हिन्दी में अनेकों समाचार पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होते हैं। हिन्दी संगणक युग हेतु आदर्श भाषा है।
लिखने व बोलने में अन्तर न होने के कारण वैज्ञानिक है, यह ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देने में समर्थ है।
अत: उपरोक्त से हिन्दी का भविष्य सुनहरा क्यों न हो ?

भारत में खड़ी बोली को राष्ट्रीय भाषा में सम्मिलित कर कई महापुरुषों ने इसके विकास में योगदान दिया जैसे - स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, श्री बालगंगाधर तिलक, सुभाषचंद्रबोस आदि। हिन्दी के यशस्वी लेखकों ने हिन्दी में श्रेष्ठ रचनाएं करके इसका गौरव बढ़ाया जैसे भारतेन्दू हरीशचन्द्र, मैथलीशरण गुप्त, महादेवी प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, बालकृष्ण भट्ट, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' व महादेवी वर्मा, इत्यादि ने हिन्दी को और अधिक सम्पन्न, समर्थ एवं समृद्ध बनाया। अंग्रेजी व चीनी के बाद हिन्दी का स्थान है। अत: इसका विकास एवं भविष्य सुनहरा है।

भारत वर्ष एक विशाल देश है इसमें अनेकों अनेक प्रकार के धर्म के लोग रहते हैं। विश्व के 178 देश जो राष्ट्र संघ में सम्मिलित हैं उनमें भारत वर्ष से प्रत्येक देश में भारत के मूल वासियों को नागरिकता प्राप्त है। श्रीमान पूर्वप्रधानमंत्री देवो गौडा ने प्रन्द्रह अगस्त पर हिन्दी में भाषण देकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया था। श्रीमान पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपाई जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर पूरे विश्वमें सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था।

भारत एक विशाल व विकासशील देश होने के कारण भारत की क्रय शक्ति विश्व में सर्वाधिक है। अत: भारत में विदेशों से विभिन्न लोग आकर यहां क्रय-विक्रय करते हैं। भारत की क्रय शक्ति सर्वाधिक है अत: विदेशियों के लिये हिन्दी का ज्ञान होना आवश्यक है। यदि वे अपने सामान को यहाँ बेचना चाहते हैं। हिन्दी सिनेमा व गानों ने हिन्दी विकास को एक नया मोड़ प्रदान किया है। भारत में हर सरकारी व गैर सरकारी विभागों में हिन्दी का एक अलग विभाग है एवं हिन्दी विभाग के कार्यकर्ताओं ने हिन्दी को विकसित करने एवं सभी में हिन्दी के लिये प्रेम जगाने में एक ऐसा योगदान प्रदान दिया है जो उल्लिखित नहीं किया जा सकता व अत्यंत प्रशंसनीय है।

उपरोक्त सभी से यह दर्शित है कि हिन्दी का भविष्य सुनहरा है।

"जयहिन्द"

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है।

- विवेकानंद

हम महानता के निकटतम होते हैं जब हम नम्रता में महान होते हैं।

- रवींद्रनाथ ठाकुर

(ख) भारतीय खेल जगत में उभरता सितारा सानिया मिर्ज़ा

सानिया मिर्जा ने सभी को अचम्भित कर दिया सिर्फ 18 साल की उम्र में इतनी परिपक्वता, ऊपर आने की जबरदस्त इच्छा, अपने आप पर इतना आत्मविश्वास। सानिया ने टेनिस जगत में एक बिजली सी पैदा कर दी, वह रमेश कृष्णन के बाद दूसरी भारतीय है जो कि विश्व टेनिस स्थान (डब्लू. टी.ए. रैन्किग) में पहले पचास (50) स्थान में आ गयी है। जहां तक महिला टेनिस खिलाड़ियों का संबंध है भारतीयों में श्रीमती वैधनाथन 1997 मे 134 वें स्थान पर रही हैं।

सानिया को दो वर्ष पहले कोई नहीं जानता था, और अब देखिए वह विश्व की सबसे तेज सीढ़ी लांघने वाली महिला बन गयी है कारण है कि उन्होंने सिर्फ 18 महिनों में डब्लू.टी.ए. रैन्किग में 265 स्थानों को लांघा है नवम्बर 2003 में वह 399 वें स्थान पर थी और अगस्त 2005 में यू.एस.ओपन के पश्चात वे 34 वें स्थान पर पहुंच चुकी हैं।

सानिया की गगनचुंबी लोकप्रियता के कारण उन्हें पहले 10 स्थानों के बाहर (यू.एस.ओपन) रहने के बावजूद 'शो कोर्ट' में खेलने की व्यवस्था करनी पड़ी। टेन स्पोर्टस (ताज टेलिविजन) के दुबई स्थित उपप्रबंधक पीटर हुटन्न को बाध्य होना पड़ा कि वे सानिया शेरपोआ के टेलिविज कवरेज की होड़ में शामिल हों और इस कारण प्रसारण राशि में 15% (पंद्रह प्रतिशत) का उछाल आया और सानिया की कांट्रेक्ट राशि बढ़ कर 1.5 करोड़ (डेढ़ करोड़) हो गयी जो कि राहुल द्रविड की इसी राशि के नजदीक हो गई। सानिया मिर्जा की उभरती प्रतिभा को अंतर्राष्ट्रीय अखबारों व अंतर्राष्ट्रीय टेलिविजन चैनलों ने अपनी सुर्खियां बनाना पसंद किया, असोसिएटेड प्रेस ने लिखा है कि सानिया अपने 5 फुट 7 इंच व 130 पौंड वाले फ्रेम की पूरी ताकत का इस्तेमाल अपने फोरहेन्ड शाट लगाने में करती है। टेनिस के जीते-लिजेंड़ माने गये जॉन मैकनरो ने लिखा है कि सानिया अपना हर शाट इतने विश्वास के साथ लगाती हैं कि उनका हर शाट जैसे विजयी होगा।

यू.एस.ओपन के चौथे राउन्ड में पहुँचने के बाद तो सानिया एक होट - प्रोपर्टी बन गयी है, उनकी इंडोरसमेंट राशि (अनुबंध-राशि) सचिन तेंडूलकर व राहुल द्रविड के बाद तीसरे स्थान पर है। लोकप्रियता की दृष्टि से वे हिन्दुस्तानी ग्लैमर गर्ल (खेलजगत) की बन गयी हैं। सुन्दरता में उनकी नाक की लौंग, कानों की बालियां व रगबिरगी टी शर्ट ने उनकी एक अलग पहचान बना दी है। उनके पास सालाना अनुबंधो में Lotto (लौटो) टाटा-चाय, टाटा इंडिकोम, एच.पी.सी.एल., मालाबार गोल्ड जिनकी कुल अनुबंध राशि तीस (30) करोड़ रुपये तक पहुँच गयी है।

सानिया एक आम परिवार की है, जब वह सिर्फ 6 सालकी थी तब उनके पिता इमरान व माँ नसीमा के उन्हें गर्मी की छुट्टियों में टेनिस खेलने का प्रशिक्षण हैद्राबाद की ऐस टेनिस अकादमी (Ace Tennis Academy) में करवाया, एक साल में ही सानिया ने अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया अकादमी के चीफ कोच श्री (एक भूतपूर्व टेनिस कप खिलाड़ी) के अनुसार सानिया में ध्यान व आत्मविश्वास दोनों मुख्य रुप से विद्यमान है। जब वे सिर्फ 11 साल की थी तो जी.वी.के. ग्रुप ने उनका खेल देखा व उनके लिये अपने खर्च से जान कारिग्टन नामक कोच को नियुक्त किया।

आज महेश भूपति, जी.वी.के ग्रुप कटिबद्ध है कि सानिया को जो भी सहायता देनी है वह दी जायेगी ताकि आने वाले सालों में वह विश्व के पहले दस खिलाड़ियों मे पहुँच सके।

आज 19 सितम्बर 2005, वह कलकत्ता में होने वाले Sunfeast सनफिस्ट प्रतियोगिता में हिस्सा ले रही है जहां उनका मुकाबला फ्रेंच ओपन की विजेता अनताईवा मिस्काना के साथ हो सकता है।

सानिया भारत की एक उभरती प्रतिभा हैं उनका भविष्य इस बात पर निर्भर है कि वे प्रसिद्धियों, प्रशंसाओ, व उपलब्धियों को कैसे लेती हैं अपनी कमजोरियों से कैसे उभर पाती हैं, अपने से उपर रैन्किग वालों से कैसे लोहा लेती हैं।

हम सिर्फ सानिया के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं और उन्हें सिर्फ शुभकामनाएं ही दे सकते हैं। भगवान उन्हें हर संभव सद्बुद्धि दे।

कतरनें क्या बोलती हैं ?

हिन्दी के संबंध में विविध समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, रचनाएं, व्यंग्य एवं विचार

अंग्रेजी कैसी और किसके लिए ?

'यह नया अंग्रेजी पत्र' –प्रयाग शुक्ल का लेख (नभाटा, २१ फरवरी) पढ़ा और मन विचलित हो उठा।

अंग्रेजी आज लोगों के सिर कुछ ज्यादा सवार हो गई है। नई पीढ़ी, यानी पैंतीस और पच्चीस की उम्रवाले माता पिता अपने बच्चों के लिए तो ऐसे सपने देखने लगे हैं कि क्या कहा जाए ? उनकी दृष्टि से 'जग तारनहार' सिर्फ अंग्रेजी ही है।

पिछले दस वर्षों में नासिक में जितने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल-मांटेसरी और प्री मांन्टेसरी खुले हैं उतने पहले नहीं थे। माता पिता आस-पड़ोस के लोग सब बोलते मराठी हैं पर बच्चे पर जोर जबरदस्ती कि वह सिर्फ अंग्रेजी सीखे। एक घटना का यदि यहां उल्लेख करूं तो असंगत नहीं होगा। एक दिन कॉलेज जाते समय देखा एक माता अपने तीन चार साल के बच्चे को 'व्हाट इज मोर नेम और विच इन योर फेव्हरेट कलर' रटा रही थी। माँ बच्चे को स्पेलिंग भी बता रही थी। 'व्हिच' (कौन सा) को वह खुद 'विच' (चुड़ैल) कह रही थी। मेरे

आपका मन

कानों को वह खटका मैंने पीछे मुड़कर देखा। महिला मराठी में बच्चे को कह रही थी। मैं रुक गई और मैंने कहा आप जो स्पेलिंग बता रही हैं न उसका अर्थ आप जानती हैं ? उसने झट से कहा– 'अजी मैं अंग्रेजी नहीं पढ़ी हूं इसीलिये तो मुझे इसे पढ़ाना है।' अब आप समझ लीजिए कि ऐसी अंग्रेजी, जिसे माँ बाप में से कोई भी ठीक ढंग से न जानता और न समझता है, उसे अपने बच्चों के सिर थोपने से क्या नतीजा निकलेगा ?

श्री प्रयाग शुक्ल ने अपने लेख में जिन बंगालियों की मातृभाषा प्रेम का उल्लेख किया है उसकी मैं गवाह हूं। तीस वर्ष पूर्व मैं बंगाल में थी। बंगला बिल्कुल नहीं जानती थी। एक अक्षर समझ में नहीं आता था। उस समय मेरी उन बंगाली सहेलियों ने मुझे बंगला सिखाई। वे मुझसे बंगला में ही बातें करती थीं। बंगला साहित्य की चर्चा करती थीं। उन्होंने मुझे लिपि सिखाई, लिखना, पढ़ना, बोलना सिखाया। मेरे मन में उस भाषा के उत्कृष्ट साहित्य पढ़ने की रुचि उत्पन्न की पर आज नासिक में रहनेवाले बंगालियों के घर में बच्चे बंगला लिखना-पढ़ना नहीं जानते हैं। वे न रवीन्द्रनाथ की कविताओं से परिचित हैं न शरत्चन्द्र के 'चन्दनाथ', 'देवदास' से। यह सब देख-समझ अतीव कष्ट होता है कि हम क्या थे और क्या हो गए हैं, किस ओर बढ़ रहे हैं। नई पीढ़ी को कुछ समझाने बुझाने का काम हम आप प्रयत्न करें। अपनी भाषा का प्रेम जगायें, उन्हें सिखायें नहीं तो यह पीढ़ी यदि बरबाद हुई तो वह हमीं को कोसेगी और हमीं पाप के भागी होंगे।

— डॉ. विद्याकेशव चिटको, नासिकरोड

आखिरी चिट्ठी

चलिए, यह साबित हो गया कि भारत में कम से कम गुर्दे तो 'एक्सपोर्ट क्वालिटी' के होते हैं !

— मयंक खांडेकर, बम्बई

हिन्दी किताब का संकट

ऐसा माना जाता है कि टेलीविजन के जबरदस्त प्रसार ने पुस्तकों के पाठक कम कर दिए हैं। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के ३६वें अधिवेशन में भी यह बात रेखांकित की गयी लेकिन दूसरी ओर बच्चों और किशोरों को जन्मदिन पर पुस्तकें भेंट करने की स्वस्थ और अच्छी परम्परा समाप्त होती जा रही है। विवाह आदि के शुभ अवसरों पर एक लिफाफे में सौ के नोट का अधिक उत्साह से स्वागत होता है। कहीं, आप कोई पुस्तक 'पैक' करके ले गये, तो इस उपहार को कोई महत्व नहीं देता। जाहिर है कि केरल, महाराष्ट्र, बंगाल सरीखे संस्कृति सम्पन्न प्रदेशों में पुस्तकों का विश्व आज भी समृद्ध है। इन प्रदेशों में टेलीविजन और फिल्मों ने पुस्तक पढ़ने की संस्कृति पर निश्चय ही निषेधी असर डाला है। लेकिन आज भी कलकत्ता के पुस्तक मेले में पुस्तक प्रेमियों की अनोखी भीड़ नजर आती है। लोग लंबी-लंबी कतारों में खड़े दिखाई देते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश हिन्दी प्रदेशों में स्थिति उत्साहजनक नहीं है, बल्कि निराशाजनक है। एक प्रमुख हिन्दी प्रकाशक के अनुसार पटना के पुस्तक मेले में भी खूब जबरदस्त भीड़ थी। लेकिन वहाँ पर किताबें बिकीं कम और चोरी ज्यादा हुईं। हिन्दी के विश्व में पुस्तकें प्रकाशित करने, उनके वितरण और उन पुस्तकों को पाठकों तक पहुँचने की सम्पूर्ण प्रक्रिया दोषपूर्ण है। यह सच है कि पिछले दिनों कागज के दामों में बहुत ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। अंग्रेजी के बड़े और सफल प्रकाशकों को भी मजबूर हो कर अपनी नयी पुस्तकों की अनेक महत्वपूर्ण योजनाएँ स्थगित करनी पड़ी हैं। पर हिन्दी पुस्तकों की दुनिया में लम्बे समय से स्थिति खराब रही है। अधिकांश प्रकाशक पाठकों तक पहुँचने के लिए मेहनत नहीं करना चाहते। वे सरकारी और बड़े संस्थानों की खरीद पर भरोसा करते रहे हैं। इन खरीदों से जुड़े अफसरों और विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों की निजी पसन्द को ध्यान में रख कर पुस्तकें छापी जाती हैं। इन पुस्तकों के दाम भी ज्यादा रखे जाते हैं, ताकि घूस आदि पर होनेवाले खर्च को खरीद से ही वसूला जा सके। नतीजा यह हुआ है कि प्रकाशकों की इस नयी पौध का प्रिय शब्द हो गया है 'जैक' लगाना। यानी सम्बन्धित अधिकारियों पर दबाव डाल कर, उन्हें खुश कर पुस्तकों की सूची को आगे बढ़ाना। यही वजह है कि कागज के दामों में वृद्धि के कारण ही हिन्दी पुस्तकों के दाम नहीं बढ़ते रहे हैं। जब कागज बहुत महँगा नहीं था, तो भी दाम अनाप-शनाप और आम पाठक की पहुँच से दूर रखे जाते थे। अनेक हिन्दी प्रकाशक समय-समय पर यह तर्क देते रहे हैं कि उन्हें हिन्दी के लेखकों की पुस्तकें बहुत कम दामों पर उपलब्ध कराने के बावजूद इन पुस्तकों के खरीदार बहुत कम मिले हैं। इस बात में आंशिक सत्य तो है। साठ के दशक के बाद से आधुनिक हिन्दी लेखन जिस पश्चिमी आधुनिकता के जबरदस्त दबाव में आया, उसका दुखद परिणाम यह हुआ कि हिन्दी लेखन के पाठक कम होने लगे। जाहिर है कि लेखक भी कम दोषी नहीं हैं। वे पुरस्कारों, फेलोशिप और कुर्सियों पर अधिक निर्भर हो गये हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि अनेक हिन्दी लेखकों को रॉयल्टी से कम पैसा मिलता होगा और पुरस्कारों से अधिक। लेकिन प्रकाशकों ने भी हिन्दी की अच्छी पुस्तकों को पाठकों तक पहुँचाने के लिए सही कोशिशें बहुत कम की हैं। बहरहाल, अब चुनौती यह है कि हिन्दी किताब के इस संकट से मुक्ति कैसे पायी जाये। काश, प्रकाशकों के इस राष्ट्रीय जमावड़े ने इस बारे में भी कुछ सोचा होता।

नवभारत टाइम्स, २५ जुलाई, १९९५

नवभारत टाइम्स, इन दिनों २१ फरवरी, १९९५.

यह नया अंग्रेजी पत्र

प्रयाग शुक्ल

एक सप्ताह भी नहीं बीता, जब कलकत्ता की सड़कों पर सैकड़ों स्कूली बच्चों ने एक जुलूस निकाला और अपनी यह माँग रखी कि हम पहली कक्षा से ही अंग्रेजी पढ़ना चाहते हैं। उनके हाथों में जो तख्तियाँ थीं, उन पर लिखा था: 'आमरा प्रथम श्रेणी थेके इंग्रेजी पोढ़ते चाई।' (बांग्ला में अंग्रेजी का उच्चारण इंग्रेजी करते हैं)। इस जुलूस का आयोजन किसी 'शिक्षा बचाओ समिति' ने किया था और जुलूस के लिए स्कूली बच्चों को, वह कलकत्ता से दूरदराज के इलाकों से भी लाई थी। क्या यह माँग वास्तव में स्कूली बच्चों की है? पहली कक्षा में या दूसरी- तीसरी कक्षा में पढ़ने वाला बच्चा क्या सचमुच अंग्रेजी के 'लाभ' से परिचित होता है? जाहिर है कि यह अभिभावकों की माँग है, और बच्चों को आगे कर दिया गया है।

इसे एक विडंबना भी कह सकते हैं कि यह माँग कलकत्ता की सड़कों पर उठी। बांगला भाषी लोग तो देश में ही नहीं, सारी दुनिया में अपने मातृभाषा प्रेम के लिए जाने जाते हैं। और अंग्रेजों ने भले ही सबसे पहले अंग्रेजी जानने वाले 'बाबू' बंगाल में बनाए हों, पर बांगला भाषियों ने बांगला के बराबर अंग्रेजी के ऊपर ही रखा था। माइकेल मधुसूदन दत्त और रवीन्द्रनाथ भी आरंभिक अंग्रेजी मोह छोड़कर बांगला की ओर ही लौटे थे। अपनी मातृभाषा के अलावा वास्तविक अभिव्यक्ति और संभव भी कहाँ और कैसे होती है? पर लगता है, स्वयं शिक्षित वर्ग और खाता-पीता वर्ग, इस तथ्य को भूला जा रहा है। वह अंग्रेजी का राज चाह रहा है। पर यह अंग्रेजी राज कैसा है? क्या कुछ वैसा ही नहीं है, जैसा मुट्ठी भर अंग्रेजों का करोड़ों हिंदुस्तानियों पर राज था। आज एक प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाला अपने देश का, वर्ग 'अंग्रेजी' से राज करना चाह रहा है। हाँ, इतनी दयानतदारी वह जरूर दिखा रहा है कि अगर सीख सको तो तुम भी अंग्रेजी सीख लो और इस राज-तंत्र में शामिल हो जाओ। सो सभी बेताब हैं और अंग्रेजी की ओर उन्मुख हैं।

कुछ दिन पहले हम दिल्ली में प्राथमिक शिक्षा से अंग्रेजी हटाने की मुहिम का हश्र देख चुके हैं। उस वक्त स्वयं सरकार ही इस प्रश्न पर विभाजित हो गई थी। जी, अंग्रेजी पढ़े बिना काम कैसे चल सकता है! पर नहीं, केवल पढ़ने-सीखने से भी काम नहीं चलेगा। माँग है कि पहली कक्षा से ही अंग्रेज पढ़ाइए। नींव को पुख्ता कीजिए। वैसे भी अब जो पढ़े-लिखे किशोर-किशोरियाँ हैं, युवक-युवतियाँ हैं, वे अपनी मातृभाषा की चीजों से दूर होते ही जा रहे हैं-उन्हें हमारी शिक्षा और समाज व्यवस्था ने ही तो मातृभाषा से दूर किया है! अब पहली कक्षा से ही बच्चों को अंग्रेजी में शिक्षित करा के, मानो इस बात का पक्का प्रबंध किया जा रहा है कि वे अपनी मातृभाषा को ढंग से सीख ही न पाएँ। जोर तो सारा अंग्रेजी पर ही होगा, ऐसे में वे ढंग से अपनी मातृभाषा से परिचित भी कैसे हो पाएँगे! बात स्कूली शिक्षा तक सीमित नहीं रही। कुछ अरसा पहले एक ट्रेन यात्रा में मैंने एक ऐसे दंपति को देखा था, जो आपस में तो हिंदी का प्रयोग कर रहे थे, पर अपने पाँच-छह साल के बच्चे से हर बात अंग्रेजी में कर रहे थे। और वह भी उनसे इसी भाषा का प्रयोग कर रहा था। अब यह न पूछ लीजिएगा कि दंपति की और बच्चे की अंग्रेजी कैसी थी- अंग्रेजी तो अंग्रेजी होती है! वे मेरी सीट के बिल्कुल पास ही बैठे थे और रास्ते भर मैं एक अचंभे की तरह इस 'खेल' को देखता रहा। मैंने बच्चे से हिंदी में बात करने की कोशिश की। उसने मेरी ओर कुछ चौंककर देखा। उसके पिता और माँ की आँखों में, मानो कोई चीज चमकी। बोले, 'अंग्रेजी में पूछिए, जवाब देगा।' वाक्य शायद ठीक यही नहीं था, पर आशय यही था। उस बच्चे से, अंग्रेजी में मुझसे बोला न गया। हाँ, उसकी अंग्रेजी जरूर सुनता रहा।

यह सही है कि अच्छी नौकरियाँ, अच्छे सम्मानजनक, फलदायक कामकाज अंग्रेजी की ही मुट्ठी में तो हैं। फिर क्यों कुंठित करें अपने बच्चों को। क्यों न उन्हें घुट्टी में ही अंग्रेजी पिलाना शुरू कर दें। यह 'शिक्षा बचाओ समिति' केवल बंगाल में नहीं है। इसी तर्ज की समितियाँ देश के कोने-कोने से उभर रही हैं। शासन-तंत्र, शिक्षा-तंत्र और सरकारें इन्हीं समितियों की बातें और सिफारिशें सुन भी रही हैं।

नई बाजार-व्यवस्था महानगरों और नगरों की दीवारों-चौराहों को अंग्रेजी होर्डिंग्स से पाटने में लगी है। प्रायः सभी भाषाएँ अंग्रेजी शब्दों का बघार लगाने लगी हैं। हिंदी, इनमें सबसे आगे है। 'मैं जरा मार्निंग में फ्री नहीं हूँ, ईवनिंग का ही प्रोग्राम रख लें तो कैसा रहे?' यही हिंदी तो आगे की जा रही है। टीवी का बहुत बड़ा जाल भी अब इसी हिंदी को हिंदी मान रहा है। अपनी-अपनी भाषाओं के लिए, भारतीय भाषाओं के लिए, बोलने वाले व्यक्ति, लगता है साहित्य और कलाओं की दुनिया में ही ज्यादा बनी हैं। राजनीति तो भाषा का उतना ही इस्तेमाल करने में लगी है, जितना राजनीतिक लाभ के लिए जरूरी है। समाज, चिंता शून्य तो नहीं है, पर अंग्रेजी या इंग्रेजी से कुछ सम्मोहित, संज्ञा-हत तो है ही। तब क्या करें? क्या यह कहें कि बच्चों का भविष्य तो है ही अंग्रेजी में। क्या हर्ज है उन्हें पहली कक्षा से ही अंग्रेजी पढ़ाने में-आगे तो अंग्रेजी माध्यम है ही।

पर नहीं, कैसे कह दें यह? क्या यह दिखाई नहीं पड़ रहा कि प्रमुखतः अंग्रेजी में ही शिक्षित या दीक्षित वर्ग, इतने बड़े देश की विविधताओं और समस्याओं को कभी ठीक से जान ही नहीं पाता। हवा में तलवार भाँजता रहता है। और चाहे जितनी सदाशयता बरते, वह हमें कहीं अधर में लटका हुआ ही दिखाई पड़ता है-भले ही बहुत कामयाब तरह से लटका हुआ। हम इस इंग्रेजी राज की जय तो नहीं ही बोल सकते।

पत्रिका अहमदाबाद, मंगलवार, 21 जून, 2005

नई दिल्ली में सोमवार को संप्रग की अध्यक्ष सोनिया गांधी को निःशुल्क हिंदी सॉफ्टवेयर विमोचन समारोह में स्मृति चिन्ह भेंट करते संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री दयानिधि मारन। छाया

सॉफ्टवेयर देसी भाषाओं में तैयार हों-सोनिया

नई दिल्ली, 20 जून।

कांग्रेस प्रमुख और राष्ट्रीय सलाहकार परिषद की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के फायदे आम जनता तक पहुंचाने के लिए इनकी सुविधाएं और सॉफ्टवेयर देसी भाषाओं में तैयार करने का आह्वान किया है।

वे सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के उन्नत संगणन विकास केंद्र 'सी.डैक' द्वारा विकसित हिंदी साफ्टवेयर साधन और फांट्स की निःशुल्क सीडी जारी करने के लिए सोमवार को यहां आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रही थीं।

सोनिया ने सी-डैक के भारतीय भाषा डाटा केंद्र के इस प्रयास को सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रगति की दिशा में एक और कदम बताते हुए

राजीव गांधी को याद किया

कहा कि इससे सबसे ज्यादा खुशी राजीव गांधी को होती। राजीव गांधी ने अस्सी के दशक में अमरीका द्वारा भारत को सुपर कम्प्यूटर देने से इनकार किए जाने पर इस प्रौद्योगिकी को देश में ही विकसित करने का संकल्प किया था और उसी समय सी-डैक की स्थापना हुई थी।

दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री दयानिधि मारन की अध्यक्षता में विज्ञान भवन में आयोजित इस समारोह में श्रीमती गांधी ने सीडी सामग्री को इंटरनेट के जरिए वितरण के लिए 'आईएलडीसी.जीओवी. इन' वेबसाइट का भी उद्घाटन किया, जिस पर पंजीकरण करा कर सामग्री को कहीं से भी डाउनलोड किया जा सकता है। उन्होंने कई आमंत्रित पत्रकारों और प्रकाशकों को यह सीडी भेंट भी की।

20-12-2005 को 'स्टाफ कैंटीन' का उद्घाटन किया गया। उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

16-08-2004 से 20-08-2004 तक आयुक्तालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला।

अहमदाबाद